विभाग की हीरक जयंती एवं प्रो. कृष्णदत्त बाजपेयी
के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय संस्कृति में मध्यप्रदेश का योगदान

18–19 दिसम्बर, 2018

आयोजक

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व
डॉ0 हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म0प्र0)

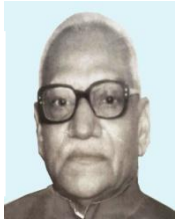

सह–आयोजक
जिला पुरातत्त्व संग्रहालय, सागर(म0प्र0)

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली, भारत सरकार

राज्य पुरातत्त्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय, म.प्र. शासन, भोपाल

विश्वविद्यालय

डॉ0 हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर को मध्यप्रदेश का प्रथम तथा देश का 18वाँ विश्वविद्यालय होने का गौरव प्राप्त है। इस विश्वविद्यालय का नाम पूर्व में सागर विश्वविद्यालय था, जिसकी स्थापना 18 जुलाई 1946 को डॉ0 हरीसिंह गौर द्वारा अपने जीवन काल में कठोर परिश्रम से संचित धनराशि से की गई थी। डॉ0 सर हरीसिंह गौर एक महान न्यायविद्, शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक तथा समाज सुधारक थे।

15 जनवरी 2009, को संसद के अधिनियम द्वारा विश्वविद्यालय को केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया गया। वर्तमान में, इसमें 11 अध्ययनशालाएँ तथा 36 शिक्षण विभाग हैं। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में लगभग 5 लाख पुस्तकों का विशाल संग्रह सहित ई–पुस्तकालय एवं इंटरनेट कनेक्टिविटी की सुविधा उपलब्ध है। विश्वविद्यालय परिसर में छात्र–छात्राओं के लिए अलग–अलग छात्रावास, बैंक, डाकघर तथा शिक्षकों एवं कर्मचारियों के लिए आवासीय भवन उपलब्ध हैं।

विभाग

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, डॉ0 हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर पुरातत्त्व के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान रखता है। विभाग की स्थापना सन् 1958 ई. में प्रसिद्ध इतिहासकार, पुरातत्त्ववेत्ता एवं कला–मर्मज्ञ प्रो. कृष्णदत्त बाजपेयी के अध्यक्षता में हुई। शिक्षण तथा शोध के अतिरिक्त विभाग पुरातात्त्विक उत्खनन तथा सर्वेक्षण कार्य में निरंतर संलग्न रहा है। विभाग द्वारा किए गए अन्वेषणों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई है। विभाग के तत्त्वावधान में एरण, त्रिपुरी, भीमबैठका, तुमैन, मल्हार, नान्दूर तथा घोड़ामाड़ा में पुरातात्त्विक उत्खनन के साथ–साथ मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के लगभग तीस जिलों का पुरातात्त्विक सर्वेक्षण भी करवाया गया। उत्खनन एवं सर्वेक्षण के परिणामस्वरूप प्रागैतिहासिक व आद्यैतिहासिक पाषाण उपकरण, मृदभाण्ड, ताम्र एवं लौह उपकरण, बाट, अस्थि व शंख के अवशेष, पाषाण मूर्तियाँ, मृण्मूर्तिया, मुद्राएँ, मुहरें, अभिलेख, वास्तु अवशेष, दैनिक उपयोग की वस्तुएँ तथा अन्य महत्वपूर्ण पुरावशेष प्रकाश में आए हैं।

पहुँच मार्ग

सागर, मध्यप्रदेश राज्य का संभाग मुख्यालय है, जो रेल और सड़क मार्ग से भली भाँति जुड़ा है। सागर रेलवे स्टेशन बीना – कटनी मार्ग पर स्थित है, यह बीना से 75 कि.मी. भोपाल से 200 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह सड़क मार्ग से भी भोपाल, जबलपुर, बीना और खजुराहो से जुड़ा है। निकटतम हवाई अड्डा, भोपाल, जबलपुर और खजुराहो में है।

प्रस्तावित चिंतन बिन्दु

सुप्रसिद्ध इतिहासविद् एवं पुरातत्त्ववेत्ता स्वर्गीय प्रो. कृष्णदत्त बाजपेयी का जन्म शताब्दी वर्ष एवं प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग की हीरक जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में **'भारतीय संस्कृति में मध्य प्रदेश का योगदान'** विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें निम्नलिखित उपशीर्षकों के अंतर्गत विद्वत्जनों तथा शोधार्थियों द्वारा शोधपत्र आमंत्रित किए जाते हैः–

उप–शीषक

1 मध्यप्रदेश का पुरातत्त्व और भारतीय संस्कृति
2 मध्यप्रदेश से प्राप्त अभिलेख और भारतीय संस्कृति
3 मध्यप्रदेश से प्राप्त मुद्रायें और भारतीय संस्कृति
4 मध्यप्रदेश का स्थापत्य और भारतीय संस्कृति
5 मध्यप्रदेश की मूर्तिकला और भारतीय संस्कृति
6 मध्यप्रदेश की चित्रकला और भारतीय संस्कृति
7 मध्यप्रदेश की धार्मिक पृष्ठभूमि और भारतीय संस्कृति
8 मध्यप्रदेश की साहित्यिक सम्पदा और भारतीय संस्कृति
9 मध्यप्रदेश की सामाजिक संरचना और भारतीय संस्कृति
10 मध्यप्रदेश की लोक संस्कृति और भारतीय संस्कृति
11 मध्यप्रदेश के प्रमुख ऐतिहासिक एवं पुरातत्त्विक स्थलों का भारतीय संस्कृति में योगदान
12 मध्यप्रदेश के संग्रहालयों में प्रदर्शित पुरावशेषों से ज्ञात संस्कृति और भारतीय संस्कृति
13 विविध संदर्भों में मध्यप्रदेश की संस्कृति
14 भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व को प्रो. कृष्णदत्त बाजपेयी का अवदान

नोट :–

1. समस्त विद्वतजनों एवं शोधार्थियों से आग्रह है, कि वे अपना शोधपत्र हिन्दी अथवा अंग्रेजी में तैयार करें। हिन्दी के शोधपत्र Kruti Dev 10, Font 14 तथा अंग्रेजी के शोधपत्र Times New Roman, Font 12 में बना कर दिए गए ई–मेल **(aihseminar2018@gmail.com)** पर भेजें।
   शोध सारांश भेजने की अन्तिम तिथि– **दिनाँक 30 नवम्बर 2018**
   पूर्ण शोधपत्र भेजने की अन्तिम तिथि– **दिनाँक 10 दिसम्बर 2018**
2. पंजीकृत प्रतिभागियों के भोजन एवं बाह्य प्रतिभागियों के आवास की व्यवस्था भी की जायेगी।

पंजीयन राशि

शिक्षक/अतिथि व्याख्याता – रु. 1000/– .
शोधार्थी/अन्य – रू. 700/–

सम्पर्क सूत्र– कार्यालयः 07582–264024 प्रो. नागेश दुबे– 09406519753,
डॉ. आर. पी. सिंह– 09479983878, डॉ. एस. के. यादव– 08989713473

राष्ट्रीय संगोष्ठी – ' भारतीय संस्कृति में मध्यप्रदेश का योगदान'

दिसम्बर 18–19, 2018

मुख्य–संरक्षक
प्रो0 आर0 पी0 तिवारी,
कुलपति, डॉ0 हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, म0प्र0

सह–संरक्षक
प्रो0 ए. पी. दुबे
अधिष्ठाता, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला

निदेशक
प्रो. नागेश दुबे

संयोजक
डॉ. राघवेन्द्र प्रताप सिंह

आयोजन सचिव
डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव

परामर्शदात्री समिति
प्रो. ए.एन. शर्मा, निदेशक, शैक्षणिक गतिविधियाँ
प्रो. ए.डी. शर्मा, निदेशक, छात्र गतिविधियाँ
प्रो. ए.पी. त्रिपाठी , विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
प्रो. अशोक अहिरवार, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग
प्रो. बी. के. श्रीवास्तव, इतिहास विभाग

सदस्यगण
डॉ. शशि कुमार सिंह, संस्कृत विभाग
डॉ. ज्ञानेश कुमार तिवारी, मनोविज्ञान विभाग
डॉ. पंकज सिंह, इतिहास विभाग
डॉ. संजय बारोलिया, इतिहास विभाग
डॉ. आशुतोष मिश्रा, हिन्दी विभाग
डॉ. विवेक जायसवाल, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
डॉ. संजय कुमार, संस्कृत विभाग
डॉ. प्रीति बागड़े, इतिहास विभाग
श्री सुल्तान सलाहुद्दीन (शोध छात्र, प्रा.भा.इ.,सं. एवं पुरातत्त्व विभाग)
श्री विशाल विक्रम सिंह (शोध छात्र, प्रा.भा.इ.,सं. एवं पुरातत्त्व विभाग)
श्री उमेश चन्द्र पाण्डेय (शोध छात्र, प्रा.भा.इ.,सं. एवं पुरातत्त्व विभाग)
श्री गोविन्द सिंह दांगी (शोध छात्र, प्रा.भा.इ.,सं. एवं पुरातत्त्व विभाग)
श्री कृष्णदेव पाण्डेय (शोध छात्र, प्रा.भा.इ.,सं. एवं पुरातत्त्व विभाग)
श्री अशोक कुमार यादव (शोध छात्र, प्रा.भा.इ.,सं. एवं पुरातत्त्व विभाग)
श्री संजीव कुमार यादव (शोध छात्र, प्रा.भा.इ.,सं. एवं पुरातत्त्व विभाग)